स्वास्थ्यवर्धक द्रव्यों के वर्गीकरण का क्रमिक पुरातन इतिहास

नरेन्द्र कुमार चोपदार शा.शि.
राजकीय आचार्य संस्कृत कॉलेज,बीकानेर (राजस्थान)

स्थाई पता–
नरेन्द्र कुमार चौपदार
शेखावटी होटल के पास
पोस्ट – मण्डावा जिला – झुंझुनूं (राजस्थान)
पिन – 333704
मोबाइल नम्बर 9414541693

प्रारम्भिक दौर में मनुष्य वनों में रहने के कारण प्रकृति के निकट सम्पर्क में रहा था। इसके कारण मनुष्य ने पेड़–पौधों का उपयोग किया। मनुष्य केवल रमणीयता के कारण वनस्पतियों की ओर आकर्षण न था वह इनके सम्बन्ध में अपने हित में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहता था इस उद्देश्य से उसने वनस्पतियों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ किया।

1.वैदिक युग–

वेदों में औषधियों के नामों का उल्लेख है। ऋग्वेद के पुरूषसूक्त में सृष्टि के सभी भौतिक पदार्थों को साशन और अनशन इन दो वर्गों में विभाजित किया गया वे आगे चलकर वनस्पतियों को फलिनी–पुष्पिणी (सपुष्प) तथा अपुष्प–अफल इन दो भागों में बांटा गया है। वैदिक युग की रचनाओं में वनस्पतियों के रचनात्मक तथा वर्गात्मक रूप में वर्गीकरण के संकेत मिलते हैं।

2.चरक संहिता–

चरकसंहिता में द्रव्यों का गहन अध्ययन किया गया तथा उनका अनेक दृष्टिकोणों से वर्गीकरण किया गया। सूत्रस्थान प्रथम अध्याय में योनिभेद के में तीन प्रकार है।

1.जांगम

2.औद्भिद

3.पार्थिव

सूत्रस्थान के 27 वें अध्याय में विस्तार से कुल 12 वर्ग बनाये गये हैं। 1.शूकधान्यवर्ग 2.शमीधान्यवर्ग 3.मांसवर्ग 4.शाकवर्ग 5.फलवर्ग 6.हरितवर्ग 7.मद्यवर्ग 8.अम्बुवर्ग 9.गोरसवर्ग 10.इक्षुवर्ग 11.कृतान्नवर्ग 12. आहारयोगिवर्ग।

सूत्रस्थान प्रथम अध्याय में वेद प्रभाव के अनुसार द्रव्यों को तीन वर्ग में तथा चतुर्थ अध्याय में शरीर के विभिन्न संस्थानों पर द्रव्यों के कर्मानुसार 50 वर्गों में बांटा गया है। जिन्हे वर्तमान समयानुसार अग्रलिखित तरिके से व्यवस्थित वर्गीकरण किया जाना उचित है।

1.पाचन संस्थान पर कर्म करने वाले
2.रक्तवहसंस्थान पर कर्म करने वाले
3.श्वसन संस्थान पर कर्म करने वाले
4.प्रजनन संस्थान पर कर्म करने वाले
5.मूत्र संस्थान पर कर्म करने वाले
6.त्वचा पर कर्म करने वाले
7.तापक्रम पर कर्म करने वाले
8.नाड़ी संस्थान पर कर्म करने वाले
9 सात्मीकरण पद पर कर्म करने वाले

3.सुश्रुतसंहिता–

सुश्रुतसंहिता में द्रव्यों का वर्गीकरण चरकसंहिता की अपेक्षा अधिक विकसित हुआ हैं। इसमें रचनात्मक दृष्टि के आधार द्रव्यों को द्रव व अन्न दो भागों में बांटा गया। द्रवद्रव्यों को पुनः 10 वर्ग बनाये गये तथा अन्नद्रव्यों को 13 भागों वर्गों में विभाजित किया गया।

द्रव द्रव्य		अन्न द्रव्य	
1.जलवर्ग	6.तैलवर्ग	1.शालिवर्ग	8.कन्दवर्ग
2.क्षीरवर्ग	7.मधुवर्ग	2कुधान्यवर्ग	9.लवणवर्ग
3.दधिवर्ग	8.इक्षुवर्ग	3.वैदलवर्ग	10.क्षारवर्ग
4.तकवर्ग	9.मद्यवर्ग	4.मांसवर्ग	11.धातुवर्ग
5.घृतवर्ग	10.मूत्रवर्ग	5.फलवर्ग	12.रत्नवर्ग
		6.शाकवर्ग	13.कृतान्तवर्ग

4.अष्टांग संग्रह–

वृद्धवाग्भट द्वारा चरक व सुश्रुत दोनों की शैलियों में समायोजन किया। वृद्धवाग्भट ने सात अध्याय में विस्तृत वर्णन किया तथा अष्टांगसंग्रह का वर्गीकरण स्वतन्त्र एवं मौलिक किया है। द्रव्यों का वर्गीकरण निम्नानुसार वर्णन किया है–

द्रव द्रव्य		अन्न द्रव्य	
1.जलवर्ग	4.तैलवर्ग	1.शूकधान्यवर्ग	4.मांसवर्ग
2.क्षीरवर्ग	5.मद्यवर्ग	2.शिम्बीधान्यवर्ग	5.शाकवर्ग
3.इक्षुवर्ग	6.मूत्रवर्ग	3.कृतान्तवर्ग	6.फलवर्ग

चरकसंहिता में 152 द्रव्यों का विवरण मिलता है। किन्तु अष्टांगसंग्रह में 155 द्रव्यों का उल्लेख मिलता है।

5.अष्टांगहृदय–

अष्टांगहृदयकार वाग्भट ने द्रव द्रव्यों को पांच वर्गों में विभाजित किया। जलवर्ग, क्षीरवर्ग, इक्षुवर्ग, तैलवर्ग और मद्यवर्ग तथा अन्न द्रव्यों में शूकधान्यवर्ग, शिम्बीधान्यवर्ग, कृतान्नवर्ग, मांसवर्ग, शाकवर्ग, फलवर्ग, औषधवर्ग। औषधवर्ग वाग्भट की मौलिक देन है।

6.कैयपदेव निघन्टु–

इस ग्रन्थ का नाम पाथ्यापथ्यविबोधक है इसमें द्रव्यों के 9 वर्ग है। औषधिवर्ग, धातुवर्ग, धान्यवर्ग, द्रववर्ग, पक्कान्नवर्ग, मांसवर्ग, विधरवर्ग, मिश्रकवर्ग और नानार्थवर्ग।

7.धन्वन्तरीय निघन्टू–

पूर्वकाल में जहां आहारद्रव्यों वर्ग की प्रधानता थी वहां अब औषध द्रव्यों की हो गई है। धन्वतरीय निधन्टू में द्रव्यों को सात वर्गों में वर्गीकरण किया–

1.गुड़च्यादिवर्ग 2.शतपुस्पादिवर्ग 3.चन्दनादिवर्ग 4.करवीरादिवर्ग 5.आम्रादिवर्ग

6.सुवर्णादिवर्ग 7.मिश्रकादिवर्ग

8.राजनिघण्टु

राजनिघन्टु में अनेक वर्ग दर्शाये गये हैं लेकिन औषधियों के अनुसार निम्न वर्गों का वर्णन मिलता है– गुडूच्यादि, शताह्वादि, पर्पटादि, पिप्पल्यादि, मूलकादि, शाल्मल्यादि, प्रभद्रादि, करवीरादि, आम्रादि, चन्दनादि, सुवर्णादि, पानीयादि, क्षीरादि, शाल्यादि, मांसादि और मिश्रकादि।

9.मदनविनोद या मदनपालनिघन्टु–

मदनपालनिघन्टु में द्रव्यों के तेरह वर्गों का वर्णन मिलता है लेकिन मिश्रक वर्ग में कोई अधिक नहीं की गई है इसमें किसी द्रव्य का वर्णन नहीं है। इसमें निम्न वर्गों का निर्धारण किया है– 1.अभयादि वर्ग, 2. शुण्ठयादि वर्ग, 3.कर्पूरादि वर्ग, 4.सुवर्णादि वर्ग, 5.वटादि वर्ग, 6.फलादि वर्ग, 7.शाकवर्ग, 8.पानीयादि वर्ग, 9. इक्षुकादि वर्ग, 10.धान्यगुण वर्ग, 11.धान्यकृतान्नादि वर्ग, 12.मांस वर्ग, 13.मिश्रक वर्ग।

10 भावप्रकाश निघन्टु–

भावप्रकाश में द्रव्यों का वर्गीकरण, ठोस आधार पर सुव्यवस्थित किया गया है इस वर्गीकरण को उस समय का सर्वश्रेष्ठ वर्गीकरण माना गया है। इसमें द्रव्यों का 22 भागों में वर्णन किया है–1.हरीतक्यादि वर्ग, 2.कर्पूरादि वर्ग, 3.गुडूच्यादि वर्ग, 4.पुष्प वर्ग, 5.फल वर्ग, 6. वटादि वर्ग, 7.धातु वर्ग, 8.धान्य वर्ग, 9. सन्धान वर्ग, 10.वारि वर्ग, 11.दुग्ध वर्ग, 12.दधि वर्ग, 13.तक्र वर्ग, 14.नवनीत वर्ग, 15.घृत वर्ग, 16.मूत्र वर्ग, 17.तैल वर्ग, 18.मधु वर्ग, 19.इक्षु वर्ग, 20.सन्धान वर्ग, 21.मांस वर्ग, 22.शाक वर्ग

10 परवर्ती निघन्टु –

समयानुसार निघन्टुकारों द्वारा भावप्रकाश को ही आधार माना तथा भावप्रकाश में वर्णित द्रव्यों के वर्गीकरण का समर्थन ही नहीं किया अपितु उसे आदर्श बनाया। इसमें प्रमुख निघन्टुओं में बल्लभनिघन्टु, निधन्टुसंग्रह, निघन्टुरत्नाकार तथा शालिग्राम निधन्टु है।

इनके अध्ययन उपरान्त यह प्रतीत होता है कि द्रव्य कर्म क्षेत्र, विशेषता आदि के आधार पर द्रव्यों का वर्गीकरण निरन्तर संशोधन होता रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. ऋग्वेद
2. चरकसंहिता
3. अष्टांग
4. कैयदेव निघन्टु
5. अष्टांगसंग्रह
6. पाथ्यापथ्यनिबोधक
7. धन्वतरिनिघन्टु
8. भावप्रकाश निघन्टु
9. निघन्टूरत्नाकार